पाठ 28

भारत की जनसंख्या एवं वितरण

आइये सीखें

- भारत में जनसंख्या से परिचय।
- जनसंख्या वितरण पर प्रभाव डालने वाले भौगोलिक कारक कौन-कौन से हैं?
- भारत में जनसंख्या का वितरण किस प्रकार हैं?
- जनजातियों का क्षेत्रीय वितरण कैसा है?
- भारत में जनसंख्या की विशेषताएँ क्या है?

जनसंख्या की दृष्टि से भारत संसार में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। सन् 2001 में भारत की जनसंख्या 1 अरब 2 करोड़ 70 लाख हो चुकी है। जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से यह संसार के कुल क्षेत्रफल का मात्र 2.4 प्रतिशत है। अर्थात संसार में भारत का सातवां स्थान है। अन्य पाँच बड़े देश, रूस, कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राजील व आस्ट्रेलिया में भारत से कम जनसंख्या पायी जाती है। भारत में विश्व की कुल जनसंख्या के लगभग 16 प्रतिशत लोग निवास करते हैं।

वितरण और घनत्व - भारत में जनसंख्या का वितरण असमान है। जनसंख्या कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक घनी बसी है तो कुछ जगह बहुत कम लोग रहते हैं। जैसे नगरों, औद्योगिक क्षेत्रों और उपजाऊ कृषि क्षेत्रों में अधिक लोग रहते हैं। इसके विपरीत ऊँचे पर्वतों, घने वनों व ठंडे ध्रुवीय क्षेत्रों में कम लोग रहते हैं। जनसंख्या के इस असमान वितरण के लिए कई कारक उत्तरदायी है।

भौगोलिक कारक - जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारकों में स्थल की बनावट, जलवायु, मिट्टी, खनिजों के भंडार इत्यादि प्रमुख हैं।

1. स्थलाकृति - लोग पर्वत, पठार, रेगिस्तान के बजाय मैदानी क्षेत्रों में रहना अधिक पसंद करते हैं। क्योंकि मैदानी क्षेत्र कृषि, विनिर्माण कार्य की दृष्टि से उपयोगी होते हैं। अत: मनुष्य अपने जीविकोपार्जन एवं खाद्यान्न की उपलब्धता वाले क्षेत्र में रहना ही पसंद करता है। विश्व के स्थल क्षेत्र के लगभग आधे भाग पर मैदान पाये जाते हैं। लेकिन विश्व की लगभग 90 प्रतिशत आबादी मैदानी क्षेत्रों में ही रहती है, जैसे गंगा यमुना का मैदान, यूरोप का उत्तरी मैदान, यांग्टीसिक्यांग का मैदान, मिसीसीपी का मैदान विश्व के सघन आबादी वाले क्षेत्र है।

2. जलवायु- मनुष्य के रहने के लिए सामान्य वर्षा एवं शीतोष्ण जलवायु अच्छी मानी जाती है। अत: मनुष्य अत्यधिक गर्म या अत्यधिक ठंडे प्रदेशों वाली जलवायु में रहना पसंद नहीं करते हैं। इसी कारण से

भूमध्यरेखीय, उष्ण जलवायु एवं ध्रुवीय प्रदेशों में लोग कम रहते हैं। हमारे देश में भी थार के रेगिस्तान एवं हिमालय के क्षेत्रों में कम लोग रहते हैं।

3. मृदा या मिट्टी- लोगों के किसी स्थान पर बसने में मिट्टी का भी महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि मृदा या मिट्टी, कृषि को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है। इस प्रकार मिट्टी से ही हमें अपना भोजन, वस्त्र और घर मिलता है। यही कारण है कि भारत में गंगा, ब्रह्मपुत्र नदी घाटी क्षेत्र, चीन के हुआंगहो तथा मिस्र के नील नदी के उपजाऊ मैदान घने बसे हुए हैं।

4. खनिजों का भंडार- खनिजों के भंडार एवं खनिजों की खोज भी लोगों को जीवकोर्पाजन के लिए आकर्षित करते हैं, जैसे भारत में छोटा नागपुर का पठार, दक्षिण अफ्रीका की हीरे की खाने तथा मध्य पूर्व के तेल क्षेत्रों में अधिक आबादी होने के उदाहरण हैं।

भारत में जनसंख्या का वितरण - भारत विश्व के सर्वाधिक अधिक जनसंख्या वाले देशों में से एक

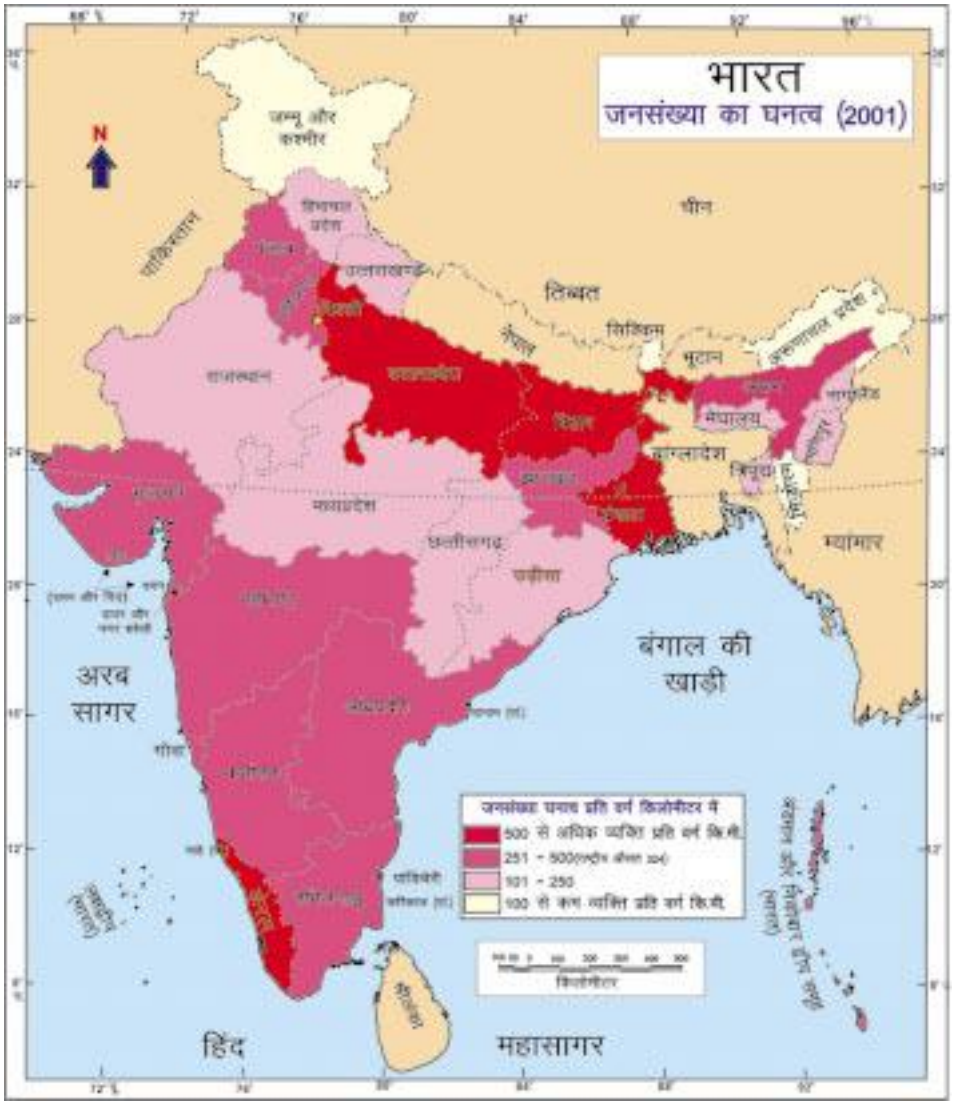

है। वर्ष 2001 की जनसंख्या का औसत घनत्व 324 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है। भारत को यहाँ रहने वाले लोगों के घनत्व के आधार पर तीन वर्गों में रखा गया है।

धरातल के किसी इकाई क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या को जनसंख्या घनत्व या जनघनत्व कहते हैं। इसे सामान्यत: वर्ग कि.मी. में व्यक्त किया जाता है, जैसे 324 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी.।

1. सघन जनसंख्या वाले क्षेत्र- भारत के जिन क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व 300 से 500 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा इससे अधिक है। उसे अधिक जनसंख्या वाला क्षेत्र कहते हैं, लेकिन केंद्र शासित प्रदेश जैसे दिल्ली, चंडीगढ़, लक्ष्यदीप, पांडिचेरी, दमनदीव में जनघनत्व 800 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. से भी अधिक है।

2. सामान्य जनसंख्या वाले क्षेत्र- जिन क्षेत्रों में 100 से 300 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. निवास करते हैं जैसे- उड़ीसा, मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ इत्यादि मध्य या सामान्य जनसंख्या वाले क्षेत्र है।

3. कम जनसंख्या वाले क्षेत्र- कुछ क्षेत्र जैसे थार का मरुस्थल एवं हिमालय पर्वतीय क्षेत्र जहां जनसंख्या घनत्व 100 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. से भी कम है उसे कम जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र कहते हैं।

मध्यप्रदेश का जनसंख्या का घनत्व 196 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है। अर्थात मध्यप्रदेश सामान्य जनसंख्या वाले क्षेत्र में आता है।

ऊपर दिए नक्शें को ध्यान से देखते हुए सघन जनसंख्या घनत्व व कम जनसंख्या घनत्व वाले पांच-पांच राज्यों के नाम नीचे लिखिए-

सघन जन घनत्व वाले राज्य	कम जन घनत्व वाले राज्य
1.	1.
2.	2.
3.	3.
4.	4.
5.	5.

भारतीय जनसंख्या की विशेषताएं

व्यवसायिक भिन्नता- हमारे देश की जनसंख्या में व्यावसायिक रूप से बड़ा असन्तुलन है। भारत की दो तिहाई जनसंख्या आज भी कृषि पर निर्भर है। जनसंख्या का 10 प्रतिशत भाग उद्योगों में लगा है और शेष भाग सेवाओं में लगा हुआ है। इस प्रकार हमारी जनसंख्या का बहुत ही थोड़ा भाग अर्थव्यवस्था व्यवसाय क्षेत्र में काम करता है। व्यवसायों के द्वारा ही कच्चे माल से उपयोगी वस्तुएं बनाकर उसके मूल्य में अभिवृद्धि की जाती है। अत: जनसंख्या में व्यवसायिक भिन्नता है।

स्त्री-पुरुष अनुपात- कुल जनसंख्या में स्त्री पुरुष बीच के संख्यात्मक अनुपात को स्त्री-पुरुष अनुपात कहते हैं। इसे प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या के रूप में व्यक्त किया जाता है जैसे, भारत में स्त्री-पुरुष अनुपात 2001 की जनगणना के अनुसार 939 है अर्थात यहां प्रति 1000 पुरुषों में 939 महिलाएं हैं। स्पष्ट है कि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या कम है।

आयु संरचना- लोगों के विकास के विभिन्न पहलुओं के लिए योजनाएं बनाने में जनसंख्या का आयु के अनुसार वितरण बहुत सहायक होता है। जनसंख्या को निम्न तीन आयुवर्गों में विभाजित किया जाता है- (1) 0-14 वर्ष (2) 15-64 वर्ष और (3) 65 वर्ष से अधिक। भारत की जनसंख्या का 34 प्रतिशत भाग युवा वर्ग में आता है। कार्यशील आयु वर्ग के लोगों का वर्ग भी काफी बड़ी है। अत: सरकार को युवा वर्ग के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा की सुविधाएँ जुटाने के लिए प्रयत्न करने पड़ते हैं।

साक्षरता स्तर- किसी भी भाषा में साधारणत: संदेश को पढ़ना, लिखना और समझना ही साक्षरता है। स्वतंत्रता के समय जनसंख्या का केवल छठा भाग ही साक्षर था। वर्ष 2001 में 65 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर है। देश में केरल सबसे अधिक साक्षरता वाला राज्य है। जबकि बिहार सबसे कम साक्षरता वाला राज्य है। मध्यप्रदेश का साक्षरता प्रतिशत 64.11 है।

देश की जनसंख्या में स्त्री व पुरुषों के साक्षरता स्तर में भी अंतर है। देश में स्त्रियों की साक्षरता 54.26 प्रतिशत है यानि अभी भी देश की लगभग आधी महिलाएं अशिक्षित है जबकि लगभग तीन चौथाई पुरुष (75.85 प्रतिशत) साक्षर है। बिहार में तो मात्र 33.5 प्रतिशत महिलाएं ही साक्षर हैं। मध्यप्रदेश में महिला साक्षरता 50.28 प्रतिशत है।

ग्रामीण व नगरीय विभिन्नता- भारत गांवों का देश है यहां लगभग 5 लाख गांव हैं और कुल आबादी का तीन चौथाई भाग यानि 74.28 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती हैं। 25.72 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में बसती है जहाँ के अधिकतर व्यक्ति कृषि के अतिरिक्त सेवा कार्य, उद्योग, व्यापार, परिवहन आदि से जीविका चलाते हैं।

सांस्कृतिक भिन्नता- भारत में अनेक प्रजातियों के लोग रहते हैं। द्रविड़, मंगोल तथा आर्य यहां की प्रमुख प्रजातियां हैं। समय के साथ-साथ वे आपस में एक-दूसरे से इस प्रकार घुल मिल गई है, कि उनके मूल लक्षण अब लुप्त हो गए हैं।

भारत के लोग भिन्न-भिन्न धर्मों का पालन करते हैं। एक ही धर्म को मानने वाले लोग भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलते हैं। भाषाएं, प्रजातियों, धर्मों, जातियों तथा प्रदेशों की सीमाओं में नहीं बंधी है। इन प्रजातीय, धार्मिक भाषायी तथा प्रादेशिक विविधताओं के बावजूद हम सभी भारतीय है।

भारत की जनसंख्या की एक तिहाई जनसंख्या अनुसूचित जनजातीय की है। इस प्रकार जनसंख्या के एक बड़ा हिस्सा अभी भी देश के सुदूर पहाड़ी अंचलों, जंगलों में आच्छादित क्षेत्रों में जहाँ सुविधाएँ लगभग नगण्य है, निवास करती है। इन लोगों की अपनी अलग संस्कृति व रहन-सहन है। जनजातियों का वितरण भी भारत में असमान है। भारत के विभिन्न प्रान्तों में घोषित अनुसूचित जनजातियों को जनसंख्या की दृष्टि से तीन प्रमुख भागों में बांटा गया है-

(1) उत्तर-पूर्वी क्षेत्र- यह क्षेत्र सबसे सघन जनजाति वाला क्षेत्र है। इसमें नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, असम, त्रिपुरा व मेघालय राज्य शामिल हैं। इनमें नागा, अंगामी, मिकिर, लुसाई, गारो, खासी, बोरो, कुकी और खम्पा आदि प्रमुख जनजातियां हैं। नागा जनजाति की संख्या (80 प्रतिशत) सर्वाधिक है।

(2) मध्यवर्ती क्षेत्र- इस क्षेत्र में मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, दक्षिणी उत्तरप्रदेश, राजस्थान, बिहार, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश तथा गुजरात शामिल हैं। यहां प्रमुख रूप से संथाल, उराव, बिरहोर, भुईया, खारिया, मुण्डा, भील, कोल, जुआंग, मुड़िया, मारिया, कोरबा, गोंड तथा कोरकू जनजातियां हैं।

मध्यप्रदेश की कुछ जनजातियां –

मध्यप्रदेश में प्रमुख रूप से निम्नलिखित जनजातियां हैं- भील, गोंड, कीर, कोरकू, नेहाल, बैगा, भैना, भरिया, सहरिया, भूमिया आदि। मध्यप्रदेश के बालाघाट, छिंदवाड़ा, मंडला, डिण्डौरी, सीधी, शहडोल, अनूपपुर, झाबुआ, खरगोन, खंडवा, शिवपुरी, धार जिले प्रमुख हैं जहां अनुसूचित जनजातियां निवास करती हैं।

(3) दक्षिणी क्षेत्र- इस क्षेत्र में कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु एवं आंध्रप्रदेश सम्मिलित हैं। यहां पर टोडा, दुरूला, चेचू, पुरवा, निपयान, भूरालो, मुथुवान, करूम्बा, कन्निकर, भुराली, कड्डार, मालकुसवान प्रमुख जनजातियाँ हैं। अण्डमान निकोबार में अण्डमान, जरावा, निकोबारी, सण्टीली मुख्य जनजातियाँ हैं, निवास करती हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(अ) भारत में जनसंख्या की कौन-कौन सी विशेषताएं हैं नाम बताते हुए किसी एक को विस्तार से लिखिए।

(ब) भारत में अधिक जनसंख्या वाले राज्य बताइएं?

(स) भारत की प्रमुख जनजातियों का वितरण बताइएं।

(द) मध्यप्रदेश में कौन-कौन सी जनजातियां रहती हैं। किन्हीं तीन के नाम लिखिए।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए-

(अ) भारत की ..... प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है।

(ब) मध्यप्रदेश की साक्षरता दर ..... है।

(स) स्त्री व पुरुष जनसंख्या के संख्यात्मक अनुपात को ..... कहते हैं।

(द) भारत की लगभग दो तिहाई जनसंख्या ..... पर निर्भर है।

3. सही जोड़ी बनाइए –

	क	ख
(अ)	सबसे कम साक्षरता वाला राज्य	केरल
(ब)	सबसे अधिक साक्षरता वाला राज्य	मध्यप्रदेश
(स)	जनजातियां बोरो, खासी	बिहार
(द)	गोंड, भील जनजातियां	असम

❖❖❖❖